# दैनिक भास्कर

नागपुर, सोमवार
3 सितंबर 2012


## कुलपति राय को फणीश्वर नाथ रेणु साहित्य सम्मान

जिला प्रतिनिधि | वर्धा.

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलपति तथा साहित्यकार विभूति नारायण राय इस वर्ष को फणीश्वर नाथ रेणु राष्ट्रीय साहित्य सम्मान से सम्मानित किए जाएंगे। कला, संस्कृति तथा साहित्य संस्थान, बटोही की ओर से यह पुरस्कार कुलपति राय को 25 और 26 अक्टूबर को सहरसा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में दिया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न तथा एकतीस हजार रुपए दिए जाएंगे।

उल्लेखनीय है कि विभूति भूषण मुखोपाध्याय, सतीनाथ भादुरी, बालचंद बनफूल , अनूपलाल मण्डल, राजकमल चौधरी तथा फणीश्वर नाथ रेणु जैसे साहित्यकारों की कर्मभूमि कोसी अंचल के साहित्य व संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध संस्थान बटोही की स्थापना 1912 में की गयी। साहित्यकार अनूपलाल मण्डल, राजकमल चौधरी तथा फणीश्वर नाथ रेणु के नाम पर राष्ट्रीय पुरस्कार आरंभ की है। परामर्शदात्री समिति ने वर्ष 2012 का फणीश्वर नाथ रेणु साहित्य सम्मान कुलपति राय को देने का निर्णय लिया है। यह पुरस्कार हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।

28 नवम्बर, 1951 को जिला आजमगढ में जन्मे विभूति नारायण राय 1975 बैच के यू.पी. कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार तथा पुलिस पदक से सम्मानित राय एक संवेदनशील पुलिस अधिकारी के साथ-साथ प्रगतिशील चिंतक तथा एक उच्चकोटि के कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा लिखित घर, शहर में कर्फ्यू, प्रेम की भूतकथा तथा किस्सा लोकतंत्र हिंदी का बहुचर्चित उपन्यास है। शहर में कर्फ्यू हिंदी के अलावा अंगरेंजी, पंजाबी, उर्दू, बांग्ला **शेष** | पेज 16 पर

**कुलपति राय को...**

व मराठी आदि भाषाओं में अनुवादित हो चुका है। तबादला पर उन्हें अंतरराष्ट्रीय इंदू शर्मा कथा सम्मान तथा किस्सा लोकतंत्र के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से सम्मान हो चुके हैं। उपन्यासों के अलावा उनका व्यंग्य संग्रह एक छात्रनेता का रोजनामचा और संस्मरण हाशिमपुरा उत्तर प्रदेश पुलिस के इतिहास का एक काला अध्याय बहुचर्चित रचनाएं है। हिंदी जगत की चर्चित पत्रिका वर्तमान साहित्य के पंद्रह वर्षों तक संपादन के साथ समकालीन हिंदी कहानियों का सम्पादन उनका उल्लेखनीय कार्य है। इस सम्मान पर साहित्यकार तथा विश्वविद्यालय परिवार ने उन्हें बधाई दी है।

नागपुर, रविवार, 2 सितंबर 2012, 15

दैनिक भास्कर

# हर शोध रचनात्मकता को देता है नई दिशा : गुप्त

ब्यूरो. वर्धा

किसी भी शोध में परिवर्तन एक अहम उद्देश होता है शोध के लिए शोधार्थी में आदर संवेदना होनी चाहिए। हर शोध एक नए परिवर्तन की दिशा और प्रेरणा प्रदान करता है। ऐसा महत्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डा. शंभू गुप्त ने कहा। वे शोध प्रविधि स्वरूप और सिंद्धात विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के तिसरे दिन के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में वे बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि शोध प्रविधि को शोध प्रविधि से नहीं बल्कि शोध दृष्टि के नाम से जाना जाना चाहिए। शोध में आत्मिकता, अपनापन और दृष्टि का होना अनिवार्य है। सत्र की अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने की। विवि के कुलपति विभूति नारायण राय व असिस्टेंट प्रोफेसर राकेश मिश्र आदि मंचासीन थे।

असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अनवर सिद्दीकी अपने विचार रखे। प्रारंभ में डा. धूपनाथ प्रसाद ने अकादमिक अनुसंधान का व्यवहारिक अवलोकन विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि शोध का काम विश्लेषण की क्षमता विकसित करता है। हम मिट्टी से ईंट बनाते हैं, लकड़ी से टेबल व चेयर बनाते हैं तो यह भी एक रिसर्च है। डा. सिद्दीकी ने शोध को एक गंभीर अध्ययन की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि शोधकर्ता को कल्पना की आखों से दूरदर्शी होना चाहिए। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि अनुसंधान में यही सही है ऐसा नहीं होना चाहिए। अनुसंधान में हमेशा गुजांइश का अवसर बना रहता है। संचालन डा. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया। धनंजय सोनटक्के सहित शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। इस सत्र में विभिन्न स्थानों से आए शोधार्थी तथा प्रतिभागी ने प्रपत्र वाचन किया।

संचार एंव मीडिया अध्ययन केंद्र के शोधार्थी विवेक कुमार जायस्वाल ने सामाजिक शोधों में भाषा का सवाल, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के शोधार्थी पंकज कुमार सिंह ने संकलित आंकड़ों की संदर्भ सूची एपीए पद्धति, मानवविज्ञान परिप्रेक्ष्य विषय पर प्रदीप त्रिपाठी, संचार एंव मीडिया अध्ययन केंद्र के शोधार्थी बच्चा बाबू ने आंकड़ों के प्रबंधन और विश्लेषण में एसपीएस की भूमिका, अर्चना ने शोध के संदर्भ को आवश्यकता, प्रासंगिसकता प्रामाणिकता के प्रश्न, अनुवाद विभाग के शोधार्थी राजेश मून ने परस्पेक्टिव ऑफ साइंटिफिक एंड मोरल रिसर्च मैथड, शोधार्थी अखिलेश कुमार उपाध्याय ने शोध सामग्री का संकलन प्रेक्षण पद्धति, शोधार्थी चित्रालेखा ने नारीवादी शोध प्रविधि, शोधार्थी किरण कुंभारे ने शोध विषय का चयन तथा शोधार्थी विषय पर सत्येंद्र कुमार ने कोशीय अर्थविज्ञान और संगणक, हिमांशु नारायण ने विज्ञापन के क्षेत्र में शोध प्रविधि का महत्व, सूर्या ने शोध विषय के चयन में शोधार्थी एवं शोध निर्देशक का दायित्व रेणु कुमारी ने अंतरानुशासनिक शोध प्रविधि उद्देश एंव महत्व, नलिन कुमार मंडल ने तथ्यों की और उचित दृष्टिकोण का संवाल सहित अरविंद रावत, सदानंद चौधरी, मोहिनी गवई, अस्मिता राजूरकर व अरविंद उपाध्याय आदि शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

दैनिक भास्कर

नागपुर, शनिवार
1 सितंबर 2012

# शोध के लिए छात्रों में हो प्रश्नाकुलताः कुलपति राय

## त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

ब्यूरो|वर्धा.

शोध एक अनवरत प्रक्रिया है हर छात्रों को चाहिए की वे शोध करते समय कापी पेस्ट को न अपनाकर गंभीरता से मेहनत कर शोध करें और गहरी रूची के माध्यम से महत्वपूर्ण उत्पादन का निर्माण करें। शोध के लिए मन में सवाल होना एक अनिवार्य शर्त है। इसलिए शोध करने वाले छात्रों के मन में हमेशा प्रश्नाकुलता होनी चाहिए। उक्त उदबोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने दिए। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में दि. 29,30 एवं 31 अगस्त को शोध प्रविधि स्वरूप ओर सिध्दांत विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन के अवसर पर शुक्रवार को हबीब तनवीर सभागार में समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। प्रो. मनोज कुमार, विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक डा. संजीव, डा. नृपेंद्र प्रसाद मोदी तथा राकेश मिश्र मंचासीन थे। कुलपति राय ने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से नए छात्रों को प्रेरणा मिलेगी तथा वे शोध के लिए गंभीर होंगे।

उन्होंने शोध के संदर्भ में धर्म और विज्ञान की व्याख्या करते हुए कहा जहां धर्म में हमेशा स्थाई होती है, वहा कॉमा, फुलस्टॉप को बदलने की भी गुजाइश नहीं होती वही विज्ञान में हमेशा नई चीजों को शोध होता रहता है।

विज्ञान में हर क्षेत्र शोध को प्रेरित करता है। कहानीकार संजीव ने शोध को तीसरी आंख बताते हुए कहा कि मेरी हर रचना मेरे लिए शोध है। शोध के लिए परकाया प्रवेश जरूरी है। इससे शोध का महत्व बढ़ जाता है तथ्य संकलन के लिए जोखिम उठाना पड़ता है तभी सही तथ्य सामने आ जाते है। प्रो. मनोज कुमार ने समाज को ज्ञान की प्रयोगशाला बताते हुए कहा शोध कि जिज्ञासा स्वयं ही उत्पन्न होती है।

समापन का संचालन अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर राकेश मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष तथा संगोष्ठी संयोजक डा. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया। इस अवसर पर अध्यापक डा. धूपनाथ प्रसाद सहित काफी संख्या में शोधार्थी उपस्थित थे।

नागपुर, 2 सितंबर 2012 | वर्धा, यवतमाल.

## अग्निशिखा

औषधीय गुणों से भरपूर अग्निशिखा वनस्पति का मनमोहक दृश्य। भास्कर छाया

The Hitavada

TUESDAY ▪ SEPTEMBER 4 ▪ 2012

# Research must bring positive changes: Gupt

■ Seminar on 'Research Methodology' organised

■ District Correspondent
WARDHA, Sept 3

Guests present at the seminar.

RESEARCH must have a valuable purpose. The scholar must have intense urge from within to make research which can bring revolution or positive changes in people's life, said Dr Shambhu Gupt Head of Women Study Department at Mahatma Gandhi Antarrastriya Hindi Vishwavidyalaya.

He was speaking at the seminar on 'Research Methodology.'

He said that research methodology should be called 'Sight Research'.

Manoj Kumar presided over. Dr D N Prasad, Dr Anvar Siddique was one of the speakers.

Dr Nrupendra Modi, Dr Raman Mishr, Rajesh Yadav, Ashok Mishr, Anirban Ghosh, Chitra Mali, Sandip Sapkale, Dr Vidhu Khare Das, Dr Pravin Vankhede, Suman Gupta, Dhananjay Sontakke and research students others were present.

Vivek Kumar Jaiswal, Pankaj Kumar Sigh, Shailendra Kumar Varma, Pradip Tripathi, Baccha Babu, Archana Pathya, Rajesh Moon, Jagdish Javade, Akhilesh Kumar Upadhyay, Rajkumar, Chitrlekha, Kiran Kumbhare, Styendra Kumar, Himanshu Narayan, Surya I V, Renu Kumari, Nalin Kumar Mandal, Arvind Ravat, Sadanand Kumar Chudhari, Mohini Gavai, Asmita Rajurkar, Arvind Kumar all research students also expressed their views on the occasion.

सकाळ
नागपूर। सोमवार, ३ सप्टेंबर २०१२। किंमत ₹ तीन

## कुलगुरू राय यांना फणीश्वर नाथ रेणू पुरस्कार

कुलगुरू विभूती नारायण राय

वर्धा, ता. २ : येथील महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू तथा साहित्यिक विभूती नारायण राय यांना २०१२ चा राष्ट्रीय पातळीवरील फणीश्वर नाथ रेणू साहित्य पुरस्कार जाहीर झाला आहे.

बटोही (जि. सहरसा, बिहार) येथील कला, संस्कृती आणि साहित्य संस्थेच्या वतीने हा पुरस्कार दिला जातो. कुलगुरू राय यांना २५ आणि २६ ऑक्टोबरला सहरसा येथे आयोजित आंतरराष्ट्रीय महोत्सवात या पुरस्काराने सन्मानित करण्यात येणार आहे. स्मृतिचिन्ह आणि ३१ हजार रुपये रोख, असे या पुरस्काराचे स्वरूप आहे. हा पुरस्कार हिंदी कथा साहित्यातील विशेष योगदानाकरिता दिला जातो. श्री. राय यांचे 'घर', 'शहर मे कर्फ्यू', 'प्रेम की भूतकथा', किस्सा लोकतंत्र' हे कथासंग्रह प्रसिद्ध आहेत.

लोकमत
शनिवार
दि. १ सप्टेंबर २०१२

हिंदी विद्यापीठात

## राष्ट्रीय चर्चासत्राचे उदघाटन

वर्धा | दि. ३१ (जिल्हा प्रतिनिधी)

हिंदी विद्यापीठात शोध प्रविधीः स्वरूप आणि सिद्धांत विषयावर तीन दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्राचे उद्घाटन करण्यात आले. यावेळी प्रमुख अतिथी व उद्घाटक म्हणून हबीब तन्वीर, माजी कुलपती प्रा. विद्युत जोशी, कुलपती डॉ. विभूतीनारायण रॉय उपस्थित होते.

आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात २१ ते ३१ ऑगस्ट दरम्यान राष्ट्रीय चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले आहे. या प्रसंगी उपस्थित मान्यवरांनी शोध प्रक्रियेवर प्रकाश टाकला. शिवाय शोध प्रबंधाचे स्वरूप, महत्त्व आणि गुणवत्ता याबाबत विद्यार्थ्यांना माहिती दिली. कार्यक्रमाचे संचालन विभाग प्रमुख प्रा. नृपेंद्र प्रसाद मोदी यांनी केले. तीन दिवसीय चर्चासत्राला अधिव्याख्याता, विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

नवभारत

नागपुर, सोमवार 3 सितंबर, 2012

# शोध के लिए अपनाएं वैज्ञानिक दृष्टि

## प्रा. विद्युत जोशी का प्रतिपादन

वर्धा कार्यालय

**वर्धा**. शोध हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है, लेकिन वैज्ञानिक शोध के लिए परंपरागत मूल्यों के साथ वैज्ञानिक दृष्टि का होना जरूरी है. उक्त विचार पूर्व कुलपति प्रो. विद्युत जोशी, अहमदाबाद ने व्यक्त किये. वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर हबीब तनवीर सभागृह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे. अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने की. इस अवसर पर संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल के. राय अंकित तथा संगोष्ठी संयोजक डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी मंचस्थ थे.

प्रो. विद्युत जोशी ने शोध प्रविधि के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शोध प्रविधि के नाम पर केवल शोध उपकरण नहीं बल्कि प्रज्ज्वलित मेधा तैयार करने की आवश्यकता है ताकि शोध को विश्वसनीय, प्रामाणिक और प्रभावी बनाया जा सके. प्रो. अनिल के. राय अंकित ने कहा सामाजिक विज्ञान के शोधार्थियों के लिए हमारा पूरा समाज ही एक प्रयोगशाला है. शोध के नए और परंपरागत सिद्धांतों पर अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि शोध के नए सिद्धांतों को गढ़ना तो है ही, पुराने स्थापित सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या भी जरूरी है. ऐसा करने के लिए शोधार्थी को चाहिए कि वे अपने समाज को एक वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टि से देखें. संचालन अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने किया.

सोमवार, ३ सप्टेंबर २०१२

लोकशाही वार्ता

# मूळ स्रोत बनावे शोधाचे मूळ केंद्र

कार्यशाळेत मार्गदर्शन करताना प्रो. चौधरी

कार्यशाळेला उपस्थित विद्यार्थी

## डॉ. चौधरी यांचे प्रतिपादन

### हिंदी विश्व विद्यालयात शोधपद्धतीवर कार्यशाळा

**स्थानिक प्रतिनिधी /२ सप्टेंबर**

वर्धा : संशोधन करणाऱ्या विद्यार्थ्यांनी मूळ पुस्तके वाचूनच संशोधन पूर्ण केले पाहिजे. त्यातुन एक नवा विचार समाजाला द्यावा. मूळ स्त्रोत हेच संशोधनाचे केंद्र व्हावे, असे प्रतिपादन बरकतुल्लाह विश्वविद्यालयाचे प्रो. एस. एन. चौधरी यांनी केले.

ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात 'शोध पद्धती व स्वरूप आणि सिद्धांत' या विषयावर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाळेत दुसऱ्या दिवसाच्या प्रथम सत्रात अध्यक्षस्थानावरून बोलत होते. प्रथम सत्रात प्रमुख अतिथी प्रमोद्कुमार सिन्हा, डॉ. सुधीर चंद्र जेना, डॉ. ज्ञानप्रकाश सिंह, विश्व विद्यालयाच्या साहित्य विद्यापीठाचे प्रो. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. अनिल कुमार दुबे, प्रो. अमरेंद्र कुमार शर्मा, प्रो.डॉ. सुरजी कुमार सिंह उपस्थित होते. उपस्थित मान्यवरांसह देशभरातून आलेल्या विविध प्राध्यापकांनी कार्यशाळेत विचार मांडले.

विश्वविद्यालयाच्या हबीब तनवीर सभागृहात सत्राच्या सुरुवातीला डॉ. जैना यांनी सिद्धांताचा उपयोग व त्याचे महत्त्व सांगितले. लोकांची साथ आणि लोकांसाठी सिद्धांताचा उपयोग करून संशोधन केले पाहिजे. शोधाच्या माध्यमातून सामाजिक परिवर्तन झाले पाहिजे. परंतु आजच्या संशोधनात सामाजिक शोधावर अंमल होतांना दिसत नाही. डॉ. आलोकनाथ त्रिपाठी म्हणाले की चिंतन हेच शोधाचे मूळ आहे. त्यांनी वर्णणात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक शोधाची अनेक उदाहरणे सांगितली. डॉ. अनिल दुबे यांन समाजात असलेल्या चांगल्या गोष्टींचे उदाहरण देऊन सांगितले की यापासून संशोधन मुक्त असले पाहिजे. अमरेंद्र कुमार शर्मा यांनी शोधात स्व चे महत्व विषत करतांना म्हटले की शोधकर्ता आग्रहशील नव्हे तर निरपेक्ष असला पाहिजे. त्यांनी शोधाचे निर्माण परीक्षण, शोधाची युक्ती, दृष्टीकोण यांना केंद्रस्थानी ठेऊन शोध करण्याचा सल्ला दिला. ते पुढे म्हणाले की कि शोधात आजही क्रिटीकल सेंन्स विकसीत झाला नाही. डॉ. सुरजीत सिंग यांनी बौध्द अध्ययनात शोध पध्दतीच्या समस्येवर आपले विचार मांडतांना सांगितले की मुळ स्त्रोत हेच संशोधनात मुख्य भूमिका निभावतात. काही संशोधकांचे उदाहरण देतांना त्यांनी सांगितले की पूर्वाग्रहाने ग्रस्त मानसिकता संशोधनात भ्रम निर्माण करतात.यापासुन बचाव करण्याकरीता संशोधकाने व्दितीय स्त्रोताचा स्वीकार करू नये. त्यांनी आवाहन केले की बौध्द चिंतनावर केलेल्या शोधात राहुल सांस्कृत्यान, धर्मानंद कोसंबी, टी. एस. राव सारख्या बौद्ध साहित्यकाराचे साहित्य वाचून बौद्ध साहित्यावर संशोधन केले पाहिजे. डॉ. ज्ञानप्रकाश सिंह यांनी गुणात्मक व संख्यात्मक शोधाची पॉवर पॉईंटच्या सहारे माहिती दिली. कार्यशाळेला विश्वविद्यालयाचे प्राध्यापक, कर्मचारी, संशोधक तसेच विद्यार्थी उपस्थित होते.

+++

प्रतिदिन अखबार
अमरावती, शनिवार, 1 सितम्बर, 2012

# फिराक की शायरी के अनेक रूप-रंग

## फिराक और हिंदुस्तानी तहजीब ▶▶ हिन्दी विवि में गोष्ठी

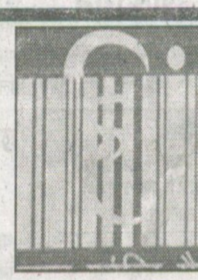

**प्रतिनिधि, 31 अगस्त**

**वर्धा-** फिराक की शायरी और व्यक्तित्व के अनेक रूप और रंग हैं. फिराक बड़े शायर और दानिश्वर थे इसमें कोई शक नहीं, उन्हें समझने के लिए सही नजर और धैर्य की जरूरत है. फिराक साहब को अपनी बात कहने का नायाब तरीका हासिल था. हालांकि उनके अपने पूर्वाग्रह भी थे. ऐसे विचार उनके जन्मदिन पर म. गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में आयोजित कार्यक्रम 'फिराक और हिंदुस्तानी तहजीब' के अध्यक्ष प्रो. अकील रिजवी ने व्यक्त किए. गोष्ठी में बतौर अतिथि प्रो. ओ.पी. मालवीय ने कहा कि गालिब, फैज और फिराक की जमीन एक है. तीनों शायरों ने अपनी गजलों, नज्मों और रूबाइयों से हिन्दूस्तानी तहजीब को समृद्ध किया. गोष्ठी का बीज वक्तव्य प्रो. ए.ए. फातमी ने प्रस्तुत किया. फिराक की शायरी पर अपनी बात केन्द्रित रखते हुए उन्होंने कहा कि गालिब, वली, इकबाल, चकबस्त और फिराक ने हिन्दुस्तानी तहजीब को अपनी शायरी में नुमाया किया. फिराक की शायरी में अंग्रेजी की रोमांटिक पोयट्री और मीर की आशिकी का जबरदस्त प्रभाव है. उनके यहां हिन्दुस्तानी तहजीब कर दायरा गैरमामूली है. उनकी स्थानीयता का भी वैश्विक संदर्भ है. उनकी 'धरती की करवट' 'हिंडोला' जैसी नज्में विश्व कविता को समृद्ध करने वाली हैं. रमेशचन्द्र द्विवेदी ने फिराक के व्यक्तित्व को अपनी स्मृतियां के माध्यम से प्रस्तुत किया. उन्होंने कहा कि फिराक को समझना जितना मुश्किल है उनको गलत समझना उतना आसान है. असाधारण व्यक्तियों के कार्य को नहीं समझने वाले हमेशा उन्हें गलत मान बैठते हैं.

क्षेत्रीय केन्द्र के प्रभारी एवं संयोजक प्रो. संतोष भदौरिया ने गोष्ठी की प्रस्तावना रखते हुए कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा फिराक पर आयोजित यह दूसरा कार्यक्रम है. फिराक को उनके अर्न्तविरोधों के साथ उनकी शायरी में अभिव्यक्त साझा संस्कृति के स्वरुप को सामने लाना ही गोष्ठी का उद्देश्य है. गोष्ठी में अली सरदार जाफरी द्वारा निर्मित फिल्म 'फिराक गोरखपुरी' का प्रदर्शन भी किया गया.

अन्त में इलाहाबाद के तमाम साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति में ख्यातनाम रंगकर्मी ए.के. हंगल के श्रद्धांजलि अर्पित की गई. संचालन प्रो. संतोष भदौरिया और स्वागत हिमांशू रंजन ने किया. गोष्ठी में प्रमुख से जियाउल हक, अजीत पुस्कल, एहतेराम इस्लाम, यश मालवीय, अंशुल त्रिपाठी, सुरेन्द्र वर्मा, नन्दल हितैषी, रविनंदन सिंह, पूनम तिवारी, अनुपम आनंद, हरीशचन्द्र अग्रवाल, संजय जोशी, हरिशचन्द्र पांडेय शशिभूषण सिंह, अशोक कुमार, नारायण सिंह सहित तमाम साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे.

प्रतिदिन अखबार

सोमवार, 3 सितम्बर, 2012

# विभूति नारायण राय को फणीश्वर नाथ रेणु साहित्य सम्मान

## हिंदी विवि के हैं कुलगुरु

प्रतिनिधि, 2 सितंबर

**वर्धा** - महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति तथा प्रसिद्ध साहित्यकार विभूति नारायण राय को 2012 का राष्ट्रीय स्तर का फणीश्वर नाथ रेणु साहित्य सम्मान देने का निर्णय कला, संस्कृति तथा साहित्य संस्थान, बटोही द्वारा लिया गया है. कुलपति राय को यह पुरस्कार 25 और 26 अक्तूबर 2012 को सहरसा में होने वाले एक भव्य अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में प्रदान किया जाएगा. पुरस्कार स्वरुप स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र तथा एकतीस हजार रुपए प्रदान किए जाएंगे.

डा. विभूति राय

कला, संस्कृति तथा साहित्य संस्थान, बटोही द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि विभूति भूषण मुखोपाध्याय, सतीनाथ भादुरी, बालयचंद बनफूल, अनूपलाल मण्डल, राजकमल चौधरी तथा फणीश्वर नाथ रेणु जैसे साहित्यकारों की कर्मभूमि कोसी अंचल के साहित्य तथा संस्कृति तथा संस्कृति के सरंक्षण के लिए प्रतिबद्ध संस्थान, बटोही की स्थापना स्थानीय साहित्य तथा कला प्रेमियों द्वारा 1912 में की गयी. बटोही ने कोसी अंचल के साहित्यकार अनूपलाल मण्डल, राजकमल चौधरी तथा फणीश्वर नाथ रेणु के नाम पर राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार की योजना आरंभ की है.28 नवम्बर, 1951 को जिला आज़मगढ़ (उत्तर प्रदेश) में जन्मे विभूति नारायण राय 1975 बैच के यू.पी.कैडर के आई.पी.एस. अधिकारी हैं. विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार तथा पुलिस मैडल से सम्मानित राय एक संवेदनशील पुलिस अधिकारी के साथ-साथ प्रगतिशील चिंतक तथा एक उच्चकोटि के कथाकार के रुप में भी जाने जाते रहे हैं. उनके द्वारा लिखित 'घर' शहर में कर्फ्यू', 'प्रेम की भूतकथा' तथा 'किस्सा लोकतंत्र' हिंदी का बहुचर्चित उपन्यास है. 'शहर में कर्फ्यू' हिंदी के अलावा अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं में अनूदित हो चुका है.

'तबादला' पर उन्हें अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान तथा 'किस्सा लोकतंत्र' के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सम्मान प्राप्त हुआ है. उपन्यासों के अलावा उनका व्यंग्य-संग्रह 'एक छात्र-नेता का रोजनामचा' और संस्मरण 'हाशिमपुरा : उत्तर प्रदेश पुलिस के इतिहास का एक काला अध्याय' बहुचर्चित रचनाएं हैं.

हिंदी जगत की चर्चित पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' के पंद्रह वर्षों तक संपादन के साथ 'समकालीन हिंदी कहानियों' का सम्पादन उनका उल्लेखनीय कार्य है.

प्रतिदिन अखबार

सोमवार, 3 सितम्बर, 2012

# डा. आशा पांडेय को मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार

## मुंबई में होगा सम्मान

प्रतिनिधि, 2 सितंबर

अमरावती- शहर की यशस्वी हिंदी लेखिका डा. आशा पांडेय को इस वर्ष का महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी का मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार देने की घोषणा हुई है. डा. पांडेय की कृति 'चबूतरे का सच' को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार शीघ्र ही अकादमी द्वारा मुंबई में आयोजित समारोह में प्रदान किया जाएगा.

डा. आशा पांडेय

उल्लेखनीय है कि संस्कृत विदुषि आशा पांडेय की उक्त कृति का इसी वर्ष जनवरी में वर्धा के महात्मा गांधी विद्यापीठ के कुलगुरू डा. विभूति नारायण राय के हस्ते जाने-माने आलोचक डा. सूरज पालीवाल की उपस्थिति में औपचारिक लोकार्पण किया गया था. यह भी ज्ञातव्य है कि नगर के प्रथितयश हिंदी साहित्यकार भगवान वैद्य 'प्रखर' को भी अकादमी का मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार उनकी कृति 'सीढ़ियों के आसपास' के लिए प्रदान किया जा चुका है.

बहरहाल डा. आशा पांडेय का एक यात्रा संस्मरण प्रकाशित हो चुका है. जबकि और भी कुछ कृतियां शीघ्र प्रकाश्य हैं. वे इससे पहले लखनऊ की पत्रिका द्वारा ली गई राष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार अर्जित कर शहर का नाम राष्ट्रीय हिंदी साहित्याकाश पर रौशन कर चुकी हैं. अकादमी पुरस्कार की घोषणा पर उनका व्यापक अभिनंदन हो रहा है.

पुण्य नगरी

मंगळवार, ४ सप्टेंबर २०१२

झरोखा

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय परिसर में खिले अनेक प्रकार के फूल यहां की शोभा बढ़ा रहे हैं.

# कुलगुरू राय यांना 'फनिश्वरनाथ रेणू साहित्य' पुरस्कार

वर्धा
दि. ३ (प्रतिनिधी)

येथील महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू व साहित्यिक विभूती नारायण राय यांना सन २०१२ चा राष्ट्रीय पातळीवरील 'फनिश्वरनाथ रेणू साहित्य' पुरस्कार घोषित झाला आहे. राय यांना हा पुरस्कार २५ व २६ ऑक्टोबर रोजी सहरसा येथे आयोजित एका आंतरराष्ट्रीय महोत्सवात प्रदान केला जाणार असून पुरस्कारात स्मृतिचिन्ह, अंगवस्त्र व रोख बक्षिसांचा समावेश आहे. कला, सांस्कृतिक व साहित्य संस्थान चटोहीद्वारा दिलेल्या प्रसिद्धीतून कळविण्यात आले आहे. परामर्श दाता समितीने सन २०१२ चा फनिश्वरनाथ रेणू साहित्य पुरस्कार प्रसिद्ध साहित्यिक व महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू विभूती नारायण राय यांना देण्याचा निर्णय घेण्यात आला आहे. प्रतिष्ठेचा हा पुरस्कार हिंदी कथासाहित्यातील विशिष्ट योगदानाकरिता देण्यात येत आहे. उत्तर प्रदेशच्या आजमगड येथे जन्मलेले विभूती नारायण राय १९७५ चे आयपीएस अधिकारी आहेत. विशिष्ट सेवेकरिता राष्ट्रपती

पुरस्कार तथा २४ मेडलने सन्मानित राय एक संवेदनशील पोलीस अधिकारी व प्रगतिशील चिंतक म्हणून ख्यातिप्राप्त आहेत. घर, शहर में कर्फ्यू, प्रेम की भूतकथा, किस्सा लोकतंत्र तथा संग्रह प्रसिद्ध झाले आहेत. 'तबादला' या पुस्तकासाठी त्यांना आंतरराष्ट्रीय इंदू शर्मा तथा किस्सा लोकतंत्रकरिता उत्तर प्रदेश संस्थेने पुरस्कार दिला आहे. 'एक छात्र नेता का रोज नामच्या' आणि 'संसारमन हासिमपुरा', 'उत्तर प्रदेश पुलीस के इतिहास का एक काला अध्याय' ह्या त्यांच्या रचना आहेत. 'वर्तमान साहित्य' या मासिकाचे ते १५ वर्षे संपादक होते. त्यांना मिळालेल्या या पुरस्काराबद्दल साहित्य जगत व विश्वविद्यालय परिवाराच्या वतीने स्वागत करण्यात येत आहे.

लोकमत समाचार

सोमवार, 3 सितंबर 2012

आयोजन | हिंदी विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने किया मार्गदर्शन

# हर शोध में परिवर्तन की प्रेरणा निहित

वर्धा। 2 सितंबर (लोस)

किसी भी शोध में परिवर्तन एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है. शोध के लिए शोधार्थी के भीतर अनंत संवेदना होनी चाहिए, जिससे हर शोध के बाद एक नये परिवर्तन की दिशा और प्रेरणा प्राप्त हो सके. इस आशय का आह्वान महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. शंभू गुप्त ने किया.

डॉ. शंभू गुप्त विश्वविद्यालय में शोध-प्रविधि स्वरूप और सिद्धांत विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के तीसरे दिन के सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में विचार व्यक्त कर रहे थे. इस सत्र की अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने की. वहीं अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रो. डॉ. डी. एन. प्रसाद तथा अनुवाद एवं निर्वाचन विद्यापीठ के सहायक प्रो. डॉ. अनवर सिद्दीकी भी वक्ता के रूप में उपस्थित थे. अपने संबोधन में डॉ. शंभू गुप्त ने आगे कहा कि शोध-प्रविधि को प्रविधि की बजाय शोध दृष्टि के रूप में पहचाना जाना चाहिए, इसके

संगोष्ठी में मार्गदर्शन करते हुए स्त्री अध्ययन विभाग के डॉ. शंभू गुप्त एवं अन्य.

साथ ही शोध में आत्मीयता, अपनापन और दूरदृष्टि का होना अनिवार्य है. सत्र के दौरान डॉ. डी. एन. प्रसाद ने 'अकादमिक अनुसंधान का व्यावहारिक आप्लावन' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शोध का काम विश्लेषण की क्षमता विकसित करना है. इस लिहाज से मिट्टी से ईंट बनाने का कार्य भी एक प्रकार का रिसर्च है. इस सत्र में डॉ. सिद्दीकी के अलावा विभिन्न स्थानों से आये शोधार्थी तथा प्रतिभागियों ने प्रपत्र का वाचन किया. वहीं अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. मनोज कुमार ने अनुसंधान में दुराग्रह से बचते हुए अनुसंधान में हमेशा परिवर्तन की गुंजाइश रखने का आह्वान किया. सत्र का संचालन डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने किया. इस अवसर पर डॉ. रमन मिश्र, राकेश मिश्र, राजेश यादव, अशोक मिश्र, अनिर्बाण घोष, चित्रा माली, संदीप सपकाले, डॉ. विधु खरे दास, डॉ. प्रवीण वानखेड़े, सुमन गुप्ता, धनजंय सोनटक्के सहित शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित थे. इसके अलावा सत्र में संस्कृति विद्यापीठ के शोधार्थी संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र विवेक कुमार जायसवाल ने सामाजिक शोधों में भाषा का सवाल विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के शोधार्थी पंकज कुमार सिंह ने संकलित आंकड़ों की संदर्भ सूची ए. पी. ए. पद्धति विषय पर मानवविज्ञान विभाग के शोधार्थी शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने वैज्ञानिक पद्धति का आगमन : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य विषय पर, प्रदीप त्रिपाठी, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के शोधार्थी बच्चा बाबू ने आंकड़ों के प्रबंधन और विश्लेषण में एस.पी.एस.एस. की भूमिका विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग की शोधार्थी अर्चना पाठ्या ने शोध के संदर्भ की आवश्यकता, प्रासंगिकता, प्रमाणिकता के विषय पर, अनुवाद विभाग के शोधार्थी राजेश मून ने परस्पेक्टिव ऑफ साइंटिफिक एड मोरल रिसर्च मेथड विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन के शोधार्थी जगदीश जवादे ने सामाजिक शोध में उपकल्पना की प्रासंगिकता विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के शोधार्थी अखिलेश कुमार उपाध्याय ने शोध सामग्री का संकलन : प्रेक्षण पद्धति विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए.

लोकमत समाचार

नागपुर, रविवार, 2 सितंबर 2012

# शोध के लिए अपनाएं वैज्ञानिक दृष्टि : प्रो. विद्युत जोशी

वर्धा। 1 सितंबर (लोस)

स्थानीय महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय शोध-प्रविधि स्वरूप और सिध्दांत विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस संगोष्ठी का उद्घाटन अहमदाबाद के पूर्व कुलपति प्रो. विद्युत जोशी ने किया. समारोह की अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने की. प्रमुख रूप से संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल के. राय अंकित तथा संयोजक डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी उपस्थित थे. प्रो. विद्युत जोशी ने शोध प्रविधि के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शोध प्रविधि के नाम पर केवल शोध उपकरण तैयार नहीं करने की आवश्यकता है. इससे शोध को विश्वसनीय, प्रामाणिक और प्रभावी बनाया जा सके. इस लिहाज से विश्वविद्यालय को ज्ञान के साथ ही रचनात्मक, लोकतांत्रिक और वैयक्तिक चेतना विकसित करने वाला संस्थान भी होना चाहिए. कार्यक्रम में संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल के. राय अंकित ने कहा सामाजिक विज्ञान के शोधार्थियों के लिए पूरा समाज ही एक प्रयोगशाला है. इसके साथ ही शोध के नए सिध्दांतों को घड़ना होगा, ताकि पुराने स्थापित सिध्दांतों की पुनर्व्याख्या हो सके. कार्यक्रम का संचालन संयोजक प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अध्यापक समेत देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के दो सौ से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे. उद्घाटन समारोह के बाद विशेष सत्र में शोधार्थी तथा छात्रों के शोध प्रविधि से जुड़े सवालों का प्रो. विद्युत जोशी ने समाधान किया. वही इस त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बरकतुल्लाह विश्वद्यिालय से प्रा. एस.एम. चौधरी, जेएनयू से प्रो. सुबोध मालाकार, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से प्रो. हरिकेश सिंह व डॉ. ज्ञान प्रकाश सिंह, भागलपुर विश्वविद्यालय से प्रो. प्रमोद कुमार सिन्हा समेत अन्य विशेषज्ञों ने शोध प्रविधि पर मार्गदर्शन किया. इसके अलावा शोध में संदर्भ की आवश्यकता, प्रासंगिकता और प्रामाणिकता के प्रश्न तथा तथ्यों की बहुलता और उचित दृष्टिकोण, शोध-प्रविधि में कम्प्यूटर तथा इंटरनेट की उपयोगिता और दुरुपयोग के संदर्भ और शोध-प्रारूप व शोध-प्रविधि का गुणात्मक संबंध विषयों पर भी विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन किया.

शोध प्रविधि पर मार्गदर्शन करते प्रो. अशोक त्रिपाठी.

नागपुर, शनिवार, 1 सितंबर 2012

# हेमंत को राजीव गांधी समरसता पुरस्कार

वर्धा। 31 अगस्त (लोस)

स्थानीय महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व शोधार्थी तथा युवा सामाजिक कार्यकर्ता हेमंत कुमार यादव को भारतरत्न राजीव गांधी की जयंती समारोह के अवसर पर राजीव गांधी समरसता पुरस्कार प्रदान किया गया. समरसता एन.जी.ओ (इंटरनेशनल कांग्रेस काठमांडू) द्वारा हेमंत यादव को यह पुरस्कार सामाजिक समरसता स्थापित करने, पर्यावरण संरक्षण, साम्प्रदायिक सौहार्द, शांति स्थापना एवं द्वंद्व निवारण के लिए किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रदान किया गया है. यह पुरस्कार हेमंत यादव को नई दिल्ली में इंटरनेशनल लॉ ऑडिटोरियम के कृष्णन मेनन भवन में शिखर सम्मेलन के दौरान भारतीय कृषक समाज के अध्यक्ष कृष्णवीर चौधरी व पूर्व ब्रिगेडियर बी. पी. एस. लाम्बा तथा पूर्व मुख्य न्यायाधीश जे.बी. सी. कृष्णमूर्ति की उपस्थिति में प्रदान किया गया. हेमंत यादव का विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय सहित अन्य ने अभिनंदन किया है.